एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बेर की खेती

(*तेंदुल चौहान[1], सरजेश कुमार मीना[2] एवं अशोक कुमार मीना [3])
[1]उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़, राजस्थान
[2]बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
[3] कृषि महाविद्यालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: tendulchouhan@gmail.com

भारत और चीन दोनों में बेर की खेती आम है। इसका पौधा कांटेदार होता है, जिससे पौधों की लंबाई किस्मों से भिन्न हो सकती है। खाने में पके हुए बेर का उपयोग किया जाता है बेर के फल को खाने के अलावा शीतल पेय पदार्थ और कैंडी बनाया जाता है। बेर फल में जस्ता, मैग्नीशियम, कैल्शियम, ए, सी और विटामिन ए पाए जाते हैं।

बेर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, बिहार, गुजरात, तमिलनाडु, पंजाब, हरियाणा और महाराष्ट्र में खेती की जाती है। बेर कम बारिश की जरूरत होती है क्योंकि वे शुष्क जलवायु में पैदा होते हैं। बेर खेती में कम खर्च और अधिक मुनाफा मिलता है | यहाँ बेर की खेती कैसे करें और एप्पल बेर की खेती की लागत, रेट और मुनाफा की जानकारी दी गई है।

बेर की खेती कहां करे?

बेर कहीं भी उगाया जा सकता है; इसे बंजर और उपजाऊ भूमि में उगाया जा सकता है। लेकिन 5.5 से 8 पीएच मान वाली बलुई दोमट मिट्टी में बेर की खेती करें। बेर बहुत शुष्क और बहुत शुष्क जगहों पर उगाया जा सकता है। इसकी खेती समुद्र तल से लगभग 1000 मीटर की ऊंचाई पर आसानी से की जा सकती है | बेर के पौधों के लिए आरम्भ में 20 से 22 डिग्री तापमान उपयुक्त होता है| पौध विकास के लिए 25 से 35 डिग्री उचित होता है, तथा इसका पौधा अधिकतम 45 डिग्री तापमान को ही सहन कर सकता है|

बेर की उन्नत किस्में

• **गोला :-** बेर की यह क़िस्म गोल आकार वाले चमकदार फलो का उत्पादन देती है | इसका पूर्ण रूप से पका हुआ फल सुनहरे पीले रंग का हो जाता है | यह क़िस्म कम समय में अधिक पैदावार देने के लिए जानी जाती है | इस क़िस्म के बेर में गुदे की मात्रा अधिक और रस मीठा होता है | इसके एक पेड़ से 80 KG की वार्षिक पैदावार मिल जाती है |

• **थाई आर जे :-** यह बेर की एक संकर क़िस्म है, जिसे उत्पादन देने में अधिक समय लगता है | इसे एप्पल बेर के नाम से भी पुकारते है | यह क़िस्म पौध रोपाई के 6 माह बाद पककर तैयार हो जाती है | इसके एक

पेड़ से 100 KG का सालाना उत्पादन मिल जाता है, और अगर ठीक से देख-रेख की जाए तो वर्ष में दो बार भी फल ले सकते है | इस क़िस्म के पेड़ की खासियत यह है, कि इसके पेड़ में काटे नहीं होते है |

• **काला गोरा :-** यह क़िस्म अगेती पैदावार लेने के लिए उगाई जाती है | इसके पेड़ पर आने वाला फल आकार में लंबा होता है | इसके फलो में 95% गुदे की मात्रा पाई जाती है | इस क़िस्म का बेर फल पकने पर पीला हो जाता है, जिसका स्वाद हल्का खट्टा होता है | इसका एक पेड़ एक वर्ष में तक़रीबन 80 KG की पैदावार दे देता है |

• **जेडजी 2 :-** बेर की यह क़िस्म अधिक पैदावार के लिए तैयार की गई है | इसमें निकलने वाले फल आकार में अंडाकार और छोटे होते है, जो पूरी तरह से पकने पर भी हरे ही रहते है | इसका फल स्वाद में मीठा होता है, जिसके पौधों पर फफूंद नामक रोग नहीं लगता है | इस क़िस्म के एक पेड़ से 150 KG की पैदावार मिल जाती है |

• **सनौर 2 :-** इस क़िस्म के बेर का फल स्वाद में काफी मीठा तथा आकार में बड़ा होता है | यह क़िस्म सबसे अधिक पंजाब में उगाई जाती है | जिसका पूर्ण विकसित पौधा सालाना 100 से 150 KG का उत्पादन दे देता है |

• **बनारसी कड़ाका :-** यह बेर की काफी प्रसिद्ध क़िस्म है, जिसे मध्य समय में उत्पादन देने के लिए जाना जाता है | इसके पेड़ो पर आने वाला फल स्वाद में मीठा होता है | इसका एक पौधा वर्ष में 125 KG बेर का उत्पादन दे देता है |

• **कैथली :-** बेर की यह क़िस्म सबसे अधिक पंजाब और हरियाणा में उगाई जाती है | इस क़िस्म के बेर का पेड़ सामान्य आकार का होता है | जिसका प्रति पौधा उत्पादन 50 से 100 KG के मध्य होता है | इसमें निकलने वाली बेर पकने पर पीले रंग की और अंडाकार आकार की होती है | इस क़िस्म का फल मार्च के अंत तक पककर तैयार होता है, जिसमे फफूंद जनित रोग नहीं लगता है |

• **उमरान :-** यह क़िस्म राजस्थान के अलवर जिले तैयार की गई है | बेर की यह क़िस्म काफी अधिक पैदावार देने के लिए जानी जाती है, जिसका सालाना उत्पादन 150 से 200 KG के मध्य होता है | इस क़िस्म के फल तुड़ाई के बाद भी लंबे समय तक ख़राब नहीं होते है | इसमें निकलने वाला फल सुनहरा पीला और पूरा पका बेर चॉकलेटी रंग का हो जाता है |

इसके अलावा, बेर की कई किस्में अगेती और पछेती पैदावार के लिए अलग-अलग स्थानों पर उगाई जाती हैं। सोनोर-2, महरूम, दोढीया, बनारसी, कोथो, मुड़या महरेश, पौंड, अलीगंज, नागपुरी, थोर्नलैस, नरमा, पैवन्दी और फेदा हैं।

बेर के खेत की तैयारी : बेर का पौधा एक बार लग जाने पर 50 से 60 वर्षो तक पैदावार देते रहता है | इसलिए इसके पौधे को खेत में लगाने से पहले खेत को बेहतरीन तरीके से तैयार कर लेना चाहिए | बेर के पौधों को खेत में तैयार किए गए गड्ढो में लगाया जाता है | इन गड्ढो को खेत में बनाने के लिए खेत में मिट्टी पलटने वाले हलों या पलाऊ से गहरी जुताई कर देते है | जुताई के बाद भूमि को कुछ समय के लिए ऐसे ही छोड़ दे | ताकि सूर्य की धूप मिट्टी में अंदर तक जाए और हानिकारक तत्व नष्ट हो जाए |

इसके बाद खेत में मौजूद मिट्टी के ढेलों को तोड़ने के लिए रोटावेटर चला दिया जाता है | जिसके बाद मिट्टी भुरभुरी हो जाती है, और फिर पाटा लगाकर खेत को समतल कर देते है, ताकि बारिश के मौसम में खेत में जलभराव न हो |

इसके बाद खेत में दो फ़ीट चौड़े और एक फ़ीट गहरे गड्ढो को 4 से 5 मीटर की दूरी पर तैयार कर ले | यह सभी गड्ढे पंक्ति में बनाए, तथा पंक्ति से पंक्ति के बीच की दूरी 3 से 4 मीटर होनी चाहिए |
गड्ढो को तैयार कर उसमे जैविक खाद और रासायनिक खाद को मिट्टी में मिलाकर फिर से गड्ढे भर दे | गड्ढो को भरने के बाद गहरी सिंचाई कर दे | इस तरह से गड्ढे में भरी गई मिट्टी में उवर्रक के पोषक तत्व अच्छे से मिल जाते है | बेर के पौधों की रोपाई के एक महीने पहले गड्ढे तैयार करने चाहिए |

बेर की पौध तैयार करना: बेर के पौधे को आप बीज और कलम के माध्यम से भी तैयार कर सकते है | बीज के द्वारा तैयार पौधे देर से पैदावार देना आरम्भ करते है | जिस वजह से पौधों को कलम द्वारा तैयार करना ज्यादा उपयुक्त होता है | कलम का रोपण करने के लिए कलम को पॉलीथिन में रखते है | इसके बाद जब पौधा तैयार हो जाए तो उसे खेत में तैयार गड्ढो में लगा दे | आज – कल कई ऐसी नर्सरियां मौजूद है, जो उन्नत क़िस्म के पौधों को रखती है, वहा से भी आप इन पौधों को खरीद सकते है | इससे किसान की मेहनत और समय दोनों की बचत हो जाती है| नर्सरी से केवल उन्ही पौधों को ख़रीदे जो ठीक से विकास कर रहे हो और उनमे किसी तरह का रोग न लगा हो|

बेर के पौध की रोपाई का तरीका : बेर के पौधों की रोपाई कलम द्वारा पौध तैयार कर करते है| बेर की पौध लगाने से पहले गड्ढो की सफाई कर ले | सफाई के पश्चात् गड्ढे के मध्य में एक छोटा गड्ढा तैयार कर ले | इसके बाद इन गड्ढो को उपचारित करने के लिए गोमूत्र या बाविस्टिन का इस्तेमाल करे | यदि खेत में दीमक की समस्या है, तो पौधों को लगाने से पहले नीम की खली या लिंडेन पाउडर से भी गड्ढो को उपचारित कर ले | इसके बाद पॉलीथिन से पौधों को निकालकर उन्हें गड्ढो में लगा दे | अब पौधे को चारो और हल्की मिट्टी से दबा दे |

व्यवसायिक तरीके से पौध रोपाई के लिए वर्ष में इसे दो तरह के मौसम में लगा सकते है | पहली बार में इन्हे गर्मी के मौसम में आरम्भ की फ़रवरी से लेकर मार्च के अंत तक लगा सकते है, तथा दूसरी बार में पौधों को वर्षा के पश्चात् अगस्त से सितंबर के महीने में लगाना होता है | साधारण तरीके से रोपाई के लिए ठंडी का मौसम छोड़कर पौधों को किसी भी मौसम में लगा सकते है |

बेर के पौधों की सिंचाई : बेर के पौधों को कुछ खास सिंचाई की जरूरत नहीं होती है | किन्तु आरम्भ में पौध विकास के लिए पानी देना होता है | इस दौरान बेर के पौधों को बुवाई के तुरंत बाद पानी देना चाहिए| इसके बाद जब पौधा विकास करने के लिए तैयार हो जाए तब उसे गर्मी में मौसम में सप्ताह में एक बार पानी दे, और सर्दी में महीने में एक बार पानी दे | बारिश में जरूरत पड़ने पर पानी दिया जाता है | जब बेर के पौधों पर फूल खिलने लगे तब पानी बिल्कुल न दे, तथा फूल से फल बनने के दौरान नमी उपयुक्त पानी दे|

बेर की फसल में खरपतवार नियंत्रण: बेर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए प्राकृतिक और रासायनिक दोनों ही विधियों का इस्तेमाल कर सकते है | किन्तु प्राकृतिक तरीका काफी अच्छा होता है | प्राकृतिक तरीके में पौध बुवाई के 3 माह पश्चात् खेत की पहली गुड़ाई की जानी चाहिए | इसके बाद जब भी बेर के खेत में खर दिखाई दे तो उसे निकाल दे | पूर्ण रूप से तैयार बेर के पौधों को वर्ष में केवल 2 गुड़ाई की जरूरत होती है |

बेर के पौधों में लगने वाले रोग व रोकथाम

रोग	रोग का प्रकार	उपचार
फल मक्खी	कीट जनित रोग	बेर के पौधों पर रोगार दवा या मेटासिस्ट्रोक्स की उचित मात्रा का घोल बनाकर छिड़काव करे|
छाल भक्षी सुंडी	कीट जनित रोग	पौधे के तनो पर मेटासिड या मोनोक्रोटोफास के घोल का छिड़काव करे, और चिकनी मिट्टी का लेप लगा दे|
चूर्णी फफूंद	फफूंद जनित रोग	केराथेन का छिड़काव बेर के पौधों पर करे|
पत्ती धब्बा रोग	फफूंद	बेर के पौधों को कॉपर आक्सीक्लोराइड कवकनाशी दवा से उपचारित करे|
फल सड़न	सड़न	ब्लाइटोक्स का छिड़काव पौधों पर करे|
लाख कीट	कीट	इस रोग से बचाव के लिए रोगार दवा का इस्तेमाल करे|

बेर के फलों की तुड़ाई : उत्तर भारत में बेर के फलो की तुड़ाई गर्मी के महीने अप्रैल में की जाती है, तथा दक्षिण भारत में सर्दियों के मौसम में बेर तोड़ी जाती है | बेर के फलो की तुड़ाई 3 से 4 बार करनी होती है, क्योकि इसके फल एक साथ पककर नहीं तैयार हो पाते है | बेर की तुड़ाई आकार और रंग के अनुसार की जाती है | बेर की तुड़ाई कर उन्हें पानी से धोकर साफ कर ले फिर उन्हें बाजार में बेचने के लिए भेज दे | बेर के फलो को सामान्य तापमान पर कुछ समय के लिए भंडारित कर सकते है |

बेर की पैदावार और लाभ : बुवाई के लगभग तीन वर्ष बाद बेर फल देने लगता है। 100 किलोग्राम फल का उत्पादन इसके पूरी तरह विकसित पौधे से होता है। बेर 30 रुपये प्रति किलो बाजार में मिलता है। इस तरह, एक पेड़ से आसानी से 3,000 रुपये की कमाई की जा सकती है। एक हेक्टेयर में लगभग एक हजार बेर के पौधों को लगाया जा सकता है। एक हेक्टेयर में बेर के पौधों को लगाकर 30 लाख रुपये की मोटी कमाई कर सकते हैं।